

3-युग की माँग प्रतिभा परिष्कार-भाग १

अध्याय 1: प्राणवान् प्रतिभाओं की खोज

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार भगवत्सत्ता का सबसे निकटतम और सुनिश्चित स्थान कहाँ है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, भगवत्सत्ता का सबसे निकटतम और सुनिश्चित स्थान मनुष्य के अन्तराल (भीतर) में विद्यमान प्राणाग्नि है।

प्रश्न 2: प्रतिभावान व्यक्ति किसे कहते हैं?

उत्तर: जो व्यक्ति कठिनाइयों से जूझ सकता है और प्रगति की दिशा में आगे बढ़ने के लिए साधन जुटा सकता है, उसे ही प्रतिभावान कहते हैं।

प्रश्न 3: प्रतिभा कहाँ से जागती है, क्या वह आसमान से बरसती है?

उत्तर: नहीं, प्रतिभा किसी पर आसमान से नहीं बरसती, स्थान कहाँ है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, भगवत्सत्ता का सबसे निकटतम और सुनिश्चित स्थान मनुष्य के अन्तराल (भीतर) में विद्यमान प्राणाग्नि है।

प्रश्न 2: प्रतिभावान व्यक्ति किसे कहते हैं?

उत्तर: जो व्यक्ति कठिनाइयों से जूझ सकता है और प्रगति की दिशा में आगे बढ़ने के लिए साधन जुटा सकता है, उसे ही प्रतिभावान कहते हैं।

प्रश्न 3: प्रतिभा कहाँ से जागती है, क्या वह आसमान से बरसती है?

उत्तर: नहीं, प्रतिभा किसी पर आसमान से नहीं बरसती, बल्कि वह व्यक्ति के अन्दर से ही जागती है।

प्रश्न 4: लेखक ने मनुष्यों के कितने वर्ग बताए हैं और वे कौन-कौन से हैं?

उत्तर: लेखक ने मनुष्यों के चार मुख्य वर्ग बताए हैं:

1. हीन वर्ग (परावलम्बी)
2. प्रजाजन (संकीर्ण स्वार्थी)
3. प्रतिभाशाली (भौतिक क्षेत्र में सफल)
4. देव-मानव या महापुरुष (आत्म-परिष्कार और लोकमंगल में लगे हुए)

प्रश्न 5: वर्तमान समय को "युगसन्धि का समय" क्यों कहा गया है?

उत्तर: वर्तमान समय को "युगसन्धि का समय" इसलिए कहा गया है क्योंकि इसमें एक ओर महाविनाश का प्रलयकारी तूफान है और दूसरी ओर सतयुगी नवनिर्माण की उमंगें भी हैं। यह विनाश और विकास का समन्वय

काल है।

प्रश्न 6: लेखक ने त्रेता युग का कौन सा उदाहरण दिया है?

उत्तर: त्रेता युग का उदाहरण देते हुए बताया गया है कि एक ओर रावण का आसुरी आतंक था, तो दूसरी ओर रामराज्य की वापसी का पुरुषार्थ। तब राम के नेतृत्व में हनुमान, अंगद और रीछ-वानरों की सेना ने असंभव कार्य कर दिखाया था।

प्रश्न 7: रामकृष्ण परमहंस ने किस युवक में छिपी प्रतिभा को पहचाना था?

उत्तर: रामकृष्ण परमहंस ने नरेन्द्र नाम के युवक में छिपी प्रतिभा को पहचाना, जो बाद में स्वामी विवेकानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: "हीन वर्ग" और "प्रजाजन" में मुख्य अन्तर क्या है? विस्तार से समझाएँ।

उत्तर: "हीन वर्ग" और "प्रजाजन" में मुख्य अन्तर आत्मनिर्भरता और विवेकशीलता का है।

- **हीन वर्ग** के लोग पूरी तरह से परावलम्बी होते हैं, उनमें सही-गलत का निर्णय करने की बुद्धि लगभग नहीं होती और वे मार्गदर्शन व साधनों के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं।
- **"प्रजाजन"** वर्ग के लोग समझदार और योग्य तो होते हैं, पर वे संकीर्ण स्वार्थपरता से घिरे रहते हैं। वे अपना बोझ स्वयं उठा लेते हैं और परावलम्बी नहीं होते, लेकिन अपनी योग्यताओं का उपयोग केवल लोभ, मोह और अहंकार की पूर्ति के लिए करते हैं।

प्रश्न 2: लेखक के अनुसार, प्रतिभा केवल धनवानों या बलवानों को ही क्यों नहीं मिलती? चाणक्य और गाँधी का उदाहरण देकर स्पष्ट करें।

उत्तर: लेखक के अनुसार, प्रतिभा का सम्बन्ध बाहरी स्वरूप या सामाजिक स्थिति से नहीं, बल्कि आंतरिक जागरण से है। यह किसी में भी जाग सकती है। इसीलिए यह कुरूप समझे जाने वाले चाणक्य और कमजोर शरीर वाले गाँधीजी जैसे व्यक्तियों का वरण करती है, जबकि कई बलवानों और सुन्दरों को छोड़ देती है। इन उदाहरणों से सिद्ध होता है कि प्रतिभा साहसिकता और सुव्यवस्था जैसे आंतरिक गुणों से विकसित होती है, न कि शारीरिक बल या सौन्दर्य से।

प्रश्न 3: इतिहास के उदाहरणों (जैसे- महाभारत, बुद्ध, गाँधी) से यह कैसे सिद्ध होता है कि महान कार्यों के लिए नेतृत्व करने वाली प्रतिभा की आवश्यकता होती है, भले ही समर्थक कम सामर्थ्यवान क्यों न हों?

उत्तर: इतिहास साक्षी है कि जब भी किसी प्रतिभा ने नेतृत्व संभाला है, तो सहयोगियों की कमी नहीं रही, भले ही वे कम शक्तिशाली हों। महाभारत में कृष्ण की प्रतिभा ने अर्जुन को प्रेरित किया और पाण्डवों की छोटी सेना कौरवों पर विजयी हुई। बुद्ध की भिक्षु मंडली और गाँधी की सत्याग्रही सेना भी साधारण लोगों का समूह

थी, लेकिन एक प्रखर प्रतिभा के नेतृत्व में उन्होंने इतिहास बदल दिया। ये उदाहरण सिद्ध करते हैं कि महान परिवर्तनों के लिए साधनों से अधिक महत्वपूर्ण एक मूर्द्धन्य प्रतिभा का नेतृत्व होता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: वर्तमान समय की दोहरी चुनौतियों (विनाश और सृजन) से निपटने के लिए लेखक किस प्रकार की प्रतिभाओं की खोज पर बल दे रहे हैं और क्यों?

उत्तर: लेखक के अनुसार, वर्तमान युगसंधि काल में दो प्रमुख चुनौतियाँ हैं: एक ओर व्यापक अवांछनीयताओं (जैसे- गरीबी, प्रदूषण, युद्धोन्माद) से जूझना और दूसरी ओर नवयुग (सतयुग) की सृजन व्यवस्था को कार्यान्वित करना। इन असाधारण कार्यों के लिए साधारण व्यक्ति सक्षम नहीं हैं। इसलिए, लेखक उच्चस्तरीय, प्राणवान, देव-मानव श्रेणी की प्रतिभाओं की खोज पर बल दे रहे हैं। ये वे महापुरुष होते हैं जो अपनी प्रतिभा का उपयोग निजी स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि आत्म-परिष्कार से लेकर लोकमंगल तक के लिए करते हैं। केवल ऐसी ही प्रतिभाएँ समाज की बड़ी समस्याओं को हल करने और उज्ज्वल भविष्य की नींव रखने की क्षमता रखती हैं, जैसे दलदल में फँसे हाथी को कोई बलवान हाथी ही निकाल सकता है।

प्रश्न 2: "प्रतिभा किसी पर आसमान से नहीं बरसती, वह तो अन्दर से जागती है।" इस कथन का गहन विश्लेषण करें और बताएं कि व्यक्ति अपनी आंतरिक प्रतिभा को कैसे जगा सकता है?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि प्रतिभा कोई बाहरी वरदान या जन्मजात विशेषाधिकार नहीं है, बल्कि यह मनुष्य के भीतर छिपी एक सुप्त शक्ति है, जिसे पुरुषार्थ द्वारा जगाया जा सकता है। इसे जगाने की प्रक्रिया आंतरिक है और इसके लिए व्यक्ति को साहसिकता और सुव्यवस्था जैसे गुणों को अपनाना पड़ता है। व्यक्ति को परावलम्बन और संकीर्ण स्वार्थपरता के स्तर से ऊपर उठना होगा। जब व्यक्ति कठिनाइयों से जूझने का साहस करता है और प्रगति के लिए साधन जुटाने की व्यवस्थित सूझ-बूझ विकसित करता है, तब उसकी आंतरिक प्रतिभा जागृत होती है। चाणक्य, कबीर, रैदास और गाँधी जैसे उदाहरण बताते हैं कि सामाजिक या शारीरिक सीमाओं के बावजूद, आत्मबल और संकल्पबल (प्राणाग्नि) को उभारकर कोई भी व्यक्ति प्रतिभावान बन सकता है।

अध्याय 2: विशिष्टता का नए सिरे से उभार

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक ने प्रतिभाओं को खोजने और निखारने की प्रक्रिया की तुलना किन-किन चीजों से की है?

उत्तर: लेखक ने प्रतिभाओं को खोजने और निखारने की प्रक्रिया की तुलना दूध से मक्खन निकालने, समुद्र से मणि-मुक्तक खोजने, कोयले की खदानों से हीरे निकालने और धातुओं को अग्नि में तपाकर शुद्ध करने से की है।

प्रश्न 2: इक्कीसवीं सदी को लेकर दूरदर्शी लोग क्या मान्यता रखते हैं?

उत्तर: दूरदर्शी लोग इक्कीसवीं सदी को सर्वतोमुखी प्रगति की संभावनाओं से भरी-पूरी मानते हैं और उस अवधि में सतयुग की वापसी पर विश्वास करते हैं।

प्रश्न 3: नवयुग के अवतरण के लिए लेखक ने कौन से दो प्रमुख कार्य बताए हैं?

उत्तर: नवयुग के अवतरण के लिए लेखक ने दो प्रमुख कार्य बताए हैं:

1. सत्प्रवृत्ति सम्बर्धन: शालीनता का सृजन करना और आदर्शवादी गतिविधियों को प्रारम्भ करना।

2. दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन: अनीति के विरुद्ध मोर्चा खड़ा करना और उसका दमन करना।

प्रश्न 4: विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को यज्ञ की रक्षा का काम क्यों सौंपा था?

उत्तर: विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को युगसृजन प्रयोजन के लिए उनकी तेजस्विता उभारने हेतु यज्ञ की रक्षा करने और असुरों से जूझने का काम सौंपा था, जो उनके लिए एक प्रकार की अग्निपरीक्षा थी।

प्रश्न 5: "प्रज्ञा परिकर" को लेखक ने किनका समुदाय कहा है?

उत्तर: लेखक ने "प्रज्ञा परिकर" को युगसृजन का लक्ष्य लेकर अवतरित हुई दिव्य आत्माओं का समुदाय कहा है।

प्रश्न 6: लेखक के अनुसार, महामानवों के जीवन में क्या कोई विराम होता है?

उत्तर: नहीं, लेखक के अनुसार महामानवों के जीवन में कोई विराम नहीं होता। वे शरीर छूटने तक निरंतर अनवरत गति से अपने लक्ष्य की ओर चलते रहते हैं।

प्रश्न 7: लेखक ने कमल के पुष्प का उदाहरण किसलिए दिया है?

उत्तर: लेखक ने कमल पुष्प का उदाहरण यह बताने के लिए दिया है कि जैसे कमल सामान्य तालाब में उगकर भी अपनी अलग पहचान बनाता है, उसी प्रकार हमें भी सामान्य परिस्थितियों में रहते हुए अपना स्वरूप एवं स्तर विशिष्ट बनाना चाहिए।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: प्रतिभाओं के प्रशिक्षण और परिवर्धन के लिए आदर्शवादी गतिविधियों में भूमिका निभाना क्यों अनिवार्य है? हनुमान और अर्जुन के उदाहरणों से समझाएँ।

उत्तर: प्रतिभा केवल खोजने से ही पर्याप्त नहीं होती, उसे खरादना भी पड़ता है। आदर्शवादी गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाने से व्यक्ति की क्षमताएँ निखरती हैं और उसका ओज, तेज और वर्चस्व बढ़ता है। यह एक प्रकार की अग्निपरीक्षा होती है। जैसे हनुमान और अर्जुन ने कठिन अग्निपरीक्षाओं से गुजरकर ही असाधारण गौरव प्राप्त किया था, उसी प्रकार आज की प्रतिभाओं को भी बड़े कार्यों में जुटकर ही अपनी क्षमताओं को सिद्ध करना और निखारना होता है। पराक्रम से जी चुराने वाले कभी महान नहीं बन सकते।

प्रश्न 2: लेखक क्यों कहते हैं कि "व्यक्ति की सामयिक एवं क्षेत्रीय समस्याओं का निराकरण भी वातावरण बदले

बिना सम्भव नहीं हो सकता"?

उत्तर: लेखक का मानना है कि आज संसार में निकटता इतनी बढ़ गई है कि समस्याएँ व्यक्तिगत न रहकर सामूहिक हो गई हैं। समाज में फैली विकृतियाँ (जैसे- अस्वस्थता, स्वार्थान्धता, आक्रामकता) हर व्यक्ति को प्रभावित करती हैं। इसलिए, किसी एक व्यक्ति की समस्या का स्थायी समाधान तब तक नहीं हो सकता जब तक पूरे वातावरण का शोधन न हो। इसकी तुलना चेचक की फुंसियों से की गई है, जिस पर केवल पट्टी बाँधने से लाभ नहीं होता, बल्कि स्थायी उपचार के लिए रक्त-शोधन करना पड़ता है। अतः, वातावरण बदलना अनिवार्य है।

प्रश्न 3: 'सत्यमेव जयते' का उद्घोष अपनी यथार्थता का परिचय कब और कैसे दे सकता है?

उत्तर: 'सत्यमेव जयते' का उद्घोष केवल कहने मात्र से यथार्थ नहीं होता। यह तब अपनी यथार्थता का परिचय दे सकता है जब इसके लिए प्रचण्ड प्रयास किए जाएँ। लेखक के अनुसार, इसके लिए दोधारी तलवार की तरह दो मोर्चों पर काम करना होगा - सत्प्रवृत्ति का संवर्धन (सृजन) और दुष्प्रवृत्ति का उन्मूलन (ध्वंस)। जब व्यक्ति इस महाजागरण के लिए कदम-कदम आगे बढ़ते हुए नवयुग के अवतरण और उज्ज्वल भविष्य के लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग पूरा कर लेगा, तभी सत्य की विजय यथार्थ रूप में प्रकट होगी।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक ने "महाकाल की अभिनव चुनौती" का उल्लेख किया है। यह चुनौती क्या है और इसे स्वीकार करने के लिए परिजनों से किस प्रकार के पुरुषार्थ की अपेक्षा की जा रही है?

उत्तर: "महाकाल की अभिनव चुनौती" का अर्थ है वर्तमान युगसंधि की विशेष परिस्थितियों में युग परिवर्तन के महान कार्य में अपनी भूमिका निभाना। यह चुनौती दोहरी है: विनाशकारी प्रवृत्तियों से जूझना और एक उज्ज्वल भविष्य का सृजन करना। इस चुनौती को स्वीकार करने के लिए परिजनों से अब तक किए गए योगदान पर ही संतुष्ट न रहकर और बड़े कदम उठाने की अपेक्षा की जा रही है। उनसे भगीरथ जैसी तप-साधना की अपेक्षा है, जिसमें वे जीवन भर अनवरत गति से, बिना रुके, परमार्थ के लिए पुरुषार्थ करते रहें। यह एक लंबा संग्राम है, जिसमें उन्हें अपनी प्रतिभा को निखारकर ऐसी प्रेरणाप्रद उपलब्धियाँ कमानی हैं जो अनुकरणीय और अविस्मरणीय हों।

प्रश्न 2: "प्रतिभाएँ अनायास ही नहीं बरस पड़ती, न वे उद्भिजों की तरह उग पड़ती हैं। उन्हें प्रयत्नपूर्वक खोजा, उभारा और खरादा जाता है।" इस कथन के आलोक में प्रतिभा विकास की त्रि-आयामी प्रक्रिया (खोजना, उभारना, खरादना) का विश्लेषण करें।

उत्तर: यह कथन प्रतिभा विकास की एक व्यवस्थित और श्रमसाध्य प्रक्रिया को दर्शाता है। इसके तीन आयाम हैं:

1. **खोजना:** इसका अर्थ है उन व्यक्तियों की पहचान करना जिनमें जन्मान्तरों के सुसंस्कारों के कारण प्रतिभा के बीज मौजूद हैं। यह प्रक्रिया समुद्र से मोती खोजने जैसी है।
2. **उभारना:** खोजने के बाद, इन प्रतिभाओं की सोई हुई शक्तियों को जगाना होता है। यह महाजागरण के माध्यम से होता है, जहाँ उन्हें युगचेतना से जोड़कर और नवसृजन साहित्य द्वारा प्रेरित कर उनकी मूर्च्छना को तोड़ा जाता है।
3. **खरादना:** यह सबसे महत्वपूर्ण चरण है। जैसे हीरे को तराशकर बहुमूल्य बनाया जाता है, वैसे ही प्रतिभाओं को आदर्शवादी और चुनौतीपूर्ण कार्यों (जैसे- सत्प्रवृत्ति सम्बर्धन, दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन) में लगाकर उनके ओजस्, तेजस् और वर्चस् को निखारा जाता है। यह प्रक्रिया एक कठिन प्रशिक्षण और अग्निपरीक्षा जैसी होती है, जिसके बिना महानता प्राप्त नहीं हो सकती।

अध्याय 3: प्रतिभा परिवर्धन के तथ्य और सिद्धान्त

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार कौन सी विभूति या सम्पदा हर स्थिति में साथ रहती है और जन्म-जन्मान्तरों तक ऊँचे स्तर की परिस्थितियों का निर्माण करती है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, 'प्रतिभा' ही वह सर्वश्रेष्ठ विभूति है जो हर स्थिति में साथ रहती है और जन्म-जन्मान्तरों तक साथ रहकर ऊँचे स्तर की परिस्थितियों का निर्माण करती रहती है।

प्रश्न 2: प्रतिभा परिष्कार का प्रथम सिद्धान्त या आधार क्या है?

उत्तर: प्रतिभा परिष्कार का प्रथम सिद्धान्त है—क्षमताओं का अभिवर्धन। इसका अर्थ है आलस्य-प्रमाद से बचकर सदा जागरूक और स्फूर्तिवान बने रहना और एक-एक क्षण को बहुमूल्य मानकर सदुद्देश्यों में सुनियोजित करना। इसे ही 'महाजागरण' कहा गया है।

प्रश्न 3: व्यक्तित्व को आकर्षक और विश्वस्त बनाने के लिए किन गुणों की आवश्यकता होती है?

उत्तर: व्यक्तित्व को आकर्षक और विश्वस्त बनाने के लिए शारीरिक और मानसिक स्वच्छता, शिष्टाचार, वाणी में मधुरता, नम्रता, दूसरों को सम्मान देना और अपनी त्रुटियों को खोजकर उन्हें सुधारने जैसे गुणों की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 4: प्रतिभावान व्यक्ति की पहचान कैसे की जा सकती है?

उत्तर: प्रतिभावान व्यक्ति के होठों पर मंद-मुस्कान रहती है, जो बताता है कि वे स्वयं में संतुष्ट और प्रसन्न हैं। वे अपने कार्यों और योजनाओं की निरंतर समीक्षा करते हैं और उनमें सुधार के लिए तत्पर रहते हैं।

प्रश्न 5: लेखक ने प्रतिभा का चौथा और अंतिम सूत्र किसे बताया है?

उत्तर: लेखक ने प्रतिभा का चौथा व अंतिम सूत्र "अग्रगमन-नेतृत्व" को बताया है, जो उत्साह, साहस और आत्मविश्वास का प्रतीक है। इसका अर्थ है कि उचित कार्य के लिए दूसरों के समर्थन की प्रतीक्षा किए बिना एकाकी आगे बढ़कर उसे कर दिखाना।

प्रश्न 6: रेल के इंजन का उदाहरण किस सिद्धांत को समझाने के लिए दिया गया है?

उत्तर: रेल के इंजन का उदाहरण 'अग्रगमन-नेतृत्व' के सिद्धांत को समझाने के लिए दिया गया है। जैसे इंजन स्वयं आगे बढ़ता है और डिब्बों की लंबी श्रृंखला को खींचकर ले जाता है, उसी प्रकार प्रतिभाशाली व्यक्ति भी आगे बढ़कर दूसरों को अपने साथ चलने के लिए प्रेरित करते हैं।

प्रश्न 7: क्या प्रतिभा का दुरुपयोग हो सकता है? यदि हाँ, तो उसका परिणाम क्या होता है?

उत्तर: हाँ, प्रतिभा का दुरुपयोग हो सकता है, जैसे आतंकवादी और अनाचारी लोग करते हैं। लेकिन इसका परिणाम अच्छा नहीं होता; ऐसे लोग आत्मप्रताड़ना, लोकभर्त्सना और दैवी प्रकोप के भागी बनते हैं और उन्हें घृणा ही मिलती है।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक क्यों कहते हैं कि प्रतिभा कोई जन्मजात उपलब्धि या वरदान नहीं, बल्कि 'स्व-उपार्जित सम्पदा' है? धन, रूप और अधिकार से इसकी तुलना कैसे की गई है?

उत्तर: लेखक प्रतिभा को 'स्व-उपार्जित सम्पदा' इसलिए कहते हैं क्योंकि इसे भाग्य से नहीं, बल्कि अपने प्रबल प्रयास से अर्जित करना पड़ता है। इसकी तुलना अन्य सम्पदाओं से करते हुए बताया गया है कि धन, रूप-यौवन, विद्या, मित्र और अधिकार जैसी चीजें अस्थायी होती हैं और समय के साथ घट जाती हैं या चली जाती हैं। इसके विपरीत, प्रतिभा एक ऐसी स्थायी सम्पदा है जो हर परिस्थिति में साथ रहती है, दूसरों की गुथियाँ सुलझाती है और जन्म-जन्मान्तर तक व्यक्ति का उत्कर्ष करती है, इसीलिए इसे सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

प्रश्न 2: प्रतिभा परिष्कार के चार प्रमुख सिद्धान्त कौन-कौन से हैं और वे आपस में किस प्रकार जुड़े हुए हैं?

उत्तर: प्रतिभा परिष्कार के चार प्रमुख सिद्धान्त हैं:

1. **महाजागरण (क्षमताओं का अभिवर्धन):** आलस्य त्यागकर हर क्षण का सदुपयोग करना।
2. **आकर्षक व्यक्तित्व:** स्वच्छता, शिष्टाचार, मधुर वाणी और नम्रता से स्वयं को विश्वस्त बनाना।
3. **सुव्यवस्था:** अपने समय, श्रम, साधनों और विचारों का सही नियोजन करना और परिस्थितियों के अनुसार रणनीति बदलना।
4. **अग्रगमन-नेतृत्व:** सही कार्य के लिए पहल करना और दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत बनना। ये सभी सिद्धान्त आपस में जुड़े हैं। महाजागरण से व्यक्ति अपनी क्षमताओं को पहचानता है। आकर्षक व्यक्तित्व से वह दूसरों का

सहयोग पाता है। सुव्यवस्था के गुण से वह अपनी क्षमताओं और सहयोग का सर्वश्रेष्ठ उपयोग करता है और अंत में, नेतृत्व के गुण से वह उन क्षमताओं को बड़े सामाजिक लक्ष्यों में लगाकर सफलता प्राप्त करता है।

प्रश्न 3: "विचार वे ही प्रौढ़ एवं प्रखर होते हैं, जो क्रिया में उतरते रहते हैं।" इस कथन का क्या आशय है? प्रतिभा विकास में विचार और क्रिया के समन्वय का क्या महत्व है?

उत्तर: इस कथन का आशय है कि केवल सोचते रहने या सिद्धांत जानने से प्रतिभा विकसित नहीं होती। विचारों को जब तक व्यवहार में नहीं उतारा जाता, वे अपरिपक्व और कमजोर रहते हैं। प्रतिभा के विकास के लिए विचार (सिद्धांतों को समझना) और क्रिया (उन्हें व्यवहार में लाना) का समन्वय अनिवार्य है। जैसे डायनेमो के घूमने से ही बैटरी चार्ज होती है, उसी प्रकार जब हम प्रतिभा के सिद्धान्तों को अपने दैनिक जीवन के कार्यों में लागू करते हैं, तभी हमारा व्यक्तित्व निखरता है और हम बड़ी सफलताएँ प्राप्त करने योग्य बनते हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: प्रतिभा महासिद्धि की साधना करने वाले व्यक्ति अपने चरित्र की प्रामाणिकता को बनाए रखने के लिए अभावग्रस्त रहना क्यों स्वीकार कर लेते हैं? आदर्शवादी क्रियाकलापों का प्रतिभा विकास से क्या गहरा संबंध है?

उत्तर: प्रतिभा महासिद्धि की साधना करने वाले दूरदर्शी और विवेकवान होते हैं। वे जानते हैं कि प्रतिभा का दुरुपयोग करके भले ही तात्कालिक सफलता मिल जाए, लेकिन वह स्थायी नहीं होती और अंततः आत्म-प्रताड़ना और लोक-निंदा का कारण बनती है। इसलिए, वे उच्चस्तरीय और स्थायी सफलता के लिए अपने चरित्र की प्रामाणिकता को हर हाल में बनाए रखते हैं, भले ही इसके लिए उन्हें अभावग्रस्त रहना पड़े या तात्कालिक लाभ से वंचित होना पड़े। आदर्शवादी क्रियाकलाप ही व्यक्तित्व को प्रामाणिक और विश्वस्त बनाते हैं। जब व्यक्ति आदर्शों पर चलता है, तो उसका आत्मबल बढ़ता है, लोग उस पर विश्वास करते हैं और उसका सहयोग करते हैं। यही प्रामाणिकता और विश्वसनीयता उसकी प्रतिभा को प्रखर बनाती है और उसे महान कार्यों के योग्य बनाती है।

प्रश्न 2: लेखक के अनुसार, प्रतिभा परिवर्धन का प्रशिक्षण देने वाले कोई स्कूल-कॉलेज क्यों नहीं हैं? यदि ऐसा है, तो एक व्यक्ति अपनी प्रतिभा को निखारने के लिए आवश्यक अवसर और वातावरण कैसे खोज सकता है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, प्रतिभा परिवर्धन का प्रशिक्षण देने वाले स्कूल-कॉलेज इसलिए नहीं हैं क्योंकि यह कोई अकादमिक विषय नहीं है जिसे पढ़ाया जा सके। यह एक व्यावहारिक और आंतरिक प्रक्रिया है, जिसके लिए निर्धारित सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारना पड़ता है। इसके लिए अवसर और वातावरण व्यक्ति को स्वयं ही खोजना पड़ता है। व्यक्ति अपनी प्रतिभा को निखारने के लिए अवसर इस प्रकार खोज सकता है:

• **अवसरों की पहचान:** उसे हनुमान की तरह समय के महत्व को पहचानना होगा, जो युग की माँग को

समझकर सही समय पर सही कार्य में जुट गए।

- **वातावरण का निर्माण:** उसे अपने निजी जीवन और परिवार से शुरुआत करनी चाहिए, जहाँ अनुशासन और व्यवस्था के प्रयोग किए जा सकते हैं।

- **सक्रिय भागीदारी:** उसे समाज में चल रहे आदर्शवादी और सृजनात्मक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए, क्योंकि ऐसे सुयोग कभी-कभी ही सामने आते हैं। इन्हीं गतिविधियों में शामिल होकर व्यक्ति प्रतिभा सम्पादन का सौभाग्य प्राप्त कर सकता है।

अध्याय 4: युगसृजन के निमित्त प्रतिभाओं को चुनौती

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक ने वर्तमान समय को कैसा "आपत्तिकाल" बताया है?

उत्तर: लेखक ने वर्तमान समय को ऐसा आपत्तिकाल बताया है जो अग्निकांड, भूकंप, या महामारी जैसी दुर्घटनाओं से कम विपन्न नहीं है, और इसमें भावनाशील लोगों की सेवा-साधना की परीक्षा होती है।

प्रश्न 2: युगसृजन को एक बड़ा काम क्यों कहा गया है?

उत्तर: युगसृजन को एक बड़ा काम इसलिए कहा गया है क्योंकि इसका संबंध किसी व्यक्ति या देश से नहीं, बल्कि पूरी मानव जाति के चिंतन, चरित्र और व्यवहार में आमूल-चूल परिवर्तन करने से है।

प्रश्न 3: लेखक के अनुसार, यदि आत्मशक्ति जागृत हो तो उसका दर्शन कहाँ अनुभव होता है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, यदि आत्मशक्ति जागती है तो उसका दर्शन आदर्शवादी प्रतिभा में ही अनुभव होता है, जिसमें विनाश से निपटने और सृजन को चरितार्थ करने की सामर्थ्य होती है।

प्रश्न 4: "दैवी सम्पदा" किसे कहा गया है?

उत्तर: सत्प्रयोजनों के लिए प्रस्तुत किए गए आदर्शवादी साहस को "दैवी सम्पदा" कहा गया है, क्योंकि यह व्यक्तित्व को प्रामाणिक, प्रखर और प्रतिभावान बनाता है।

प्रश्न 5: विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को बला-अतिबला विद्या क्यों प्रदान की थी?

उत्तर: विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को बला-अतिबला विद्या इसलिए प्रदान की थी ताकि वे शिव धनुष तोड़ने, सीता स्वयंवर जीतने, लंका की असुरता मिटाने और रामराज्य के रूप में सतयुग की वापसी संभव कर दिखाने में समर्थ हो सकें।

प्रश्न 6: चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को और समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी को क्या प्रदान किया था?

उत्तर: चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को कोई खजाना नहीं, बल्कि ऐसा संकल्पबल उपलब्ध कराया था जिससे वे चक्रवर्ती बन सके। इसी प्रकार, समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी के हौसले इतने बुलंद किए कि वे अजेय शासन

से लोहा ले सके।

प्रश्न 7: लेखक के अनुसार, प्रतिभाएँ संसार के किन-किन क्षेत्रों में मौजूद हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार, प्रतिभाएँ संसार के हर क्षेत्र में मौजूद हैं, जैसे- धनाढ्यों, शासनाध्यक्षों, कलाकारों, व्यवसायियों, वैज्ञानिकों और मनीषियों में।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक ने ऋद्धि-सिद्धियों और दैवी वरदानों की पारंपरिक धारणा का खंडन कैसे किया है? उनके अनुसार इनका वास्तविक स्वरूप क्या है?

उत्तर: लेखक ने पारंपरिक धारणा का खंडन करते हुए कहा है कि ऋद्धि-सिद्धियाँ कोई चमत्कार दिखाने या कौतुक करने के लिए नहीं होतीं। उनका वास्तविक स्वरूप व्यक्ति की जागृत आत्मशक्ति और आदर्शवादी प्रतिभा है। ये कोई बाहरी अनुदान नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर की वह सामर्थ्य है जिससे वह ध्वंस से निपटता है और सृजन को संभव बनाता है। जैसे अर्जुन को मिला गाण्डीव या शिवाजी को मिली भवानी तलवार भौतिक अस्त्र नहीं, बल्कि अनीति को परास्त करने की समर्थता का प्रतीक थे।

प्रश्न 2: युग परिवर्तन के कार्य में "परावलम्बन की हीनता" और "स्वार्थपरता की संकीर्णता" से ऊपर उठना क्यों आवश्यक है?

उत्तर: युग परिवर्तन एक विशाल और असाधारण कार्य है, जिसके लिए असाधारण व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है। "परावलम्बन की हीनता" व्यक्ति को दूसरों पर निर्भर बनाती है, जिससे वह नेतृत्व करने या कठिन चुनौतियों का सामना करने में अक्षम रहता है। वहीं, "स्वार्थपरता की संकीर्णता" व्यक्ति को केवल अपने लाभ तक सीमित रखती है और वह समाज के व्यापक हित के लिए अपनी क्षमता का उपयोग नहीं कर पाता। इन दोनों सीमाओं से ऊपर उठकर ही व्यक्ति अपने अंतःकरण को भाव-संवेदनाओं से भरकर स्वयं को परिष्कृत कर सकता है और वातावरण को बदलने की क्षमता विकसित कर सकता है।

प्रश्न 3: इतिहास के विभिन्न महापुरुषों (जैसे- बुद्ध, अशोक, गाँधी) के उदाहरणों के माध्यम से लेखक यह कैसे सिद्ध करते हैं कि प्रतिभा का सच्चा उपयोग परमार्थ में ही है?

उत्तर: लेखक विभिन्न उदाहरणों से सिद्ध करते हैं कि जिन महापुरुषों ने अपनी प्रतिभा का उपयोग संकीर्ण स्वार्थ के लिए किया, वे भुला दिए गए और पश्चाताप करते हुए मरे। इसके विपरीत, बुद्ध, अशोक, गाँधी, महामना मालवीय, अहिल्या बाई जैसी विभूतियों ने स्वयं सादा जीवन जिया और अपनी पूरी क्षमता (वर्चस) को परमार्थ के लिए नियोजित कर दिया। इसी कारण वे आज भी प्रातः स्मरणीय हैं और उनका जीवन दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत है। यह दर्शाता है कि प्रतिभा की सार्थकता और सम्मान व्यक्तिगत भोग में नहीं, बल्कि उसे लोकमंगल के लिए समर्पित करने में है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: "युगचेतना अब तक स्वार्थपरता और प्रमाद को प्रोत्साहित करने वाली प्रतिभाओं को भी झकझोरने और समय के अनुरूप बदलने के लिए बाधित करेगी।" इस कथन का विश्लेषण करें। इसका क्या अर्थ है और यह परिवर्तन कैसे संभव होगा?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि वर्तमान युगसंधि का समय इतना शक्तिशाली है कि वह उन प्रतिभाओं को भी अच्छता नहीं छोड़ेगा जो अब तक केवल अपने निजी स्वार्थ (धन, पद, प्रसिद्धि) के लिए अपनी क्षमता का उपयोग करती आई हैं। यह परिवर्तन इसलिए संभव होगा क्योंकि युग परिवर्तन की लहर एक तूफान की तरह व्यापक होती है जो हर किसी को प्रभावित करती है। जब समाज में व्यापक परिवर्तन होता है, तो पुरानी व्यवस्थाएं और मान्यताएं ढह जाती हैं। ऐसे में, जो प्रतिभाशाली व्यक्ति केवल स्वार्थ के लिए काम कर रहे थे, उन्हें भी अपनी दिशा बदलनी होगी, क्योंकि उनकी पुरानी स्वार्थपूर्ण सफलताएं अप्रासंगिक हो जाएंगी। उन्हें अपनी क्षमता को सृजन के नए प्रयोजनों में लगाने के लिए विवश होना पड़ेगा, ठीक वैसे ही जैसे राजक्रांतियों के समय बड़े-बड़े राजमुकुट धराशायी हो गए थे।

प्रश्न 2: "पतनोन्मुख प्रवृत्तियाँ तो आँधी-तूफान की तरह गति पकड़ लेती हैं, पर उन्हें रोकना और तदुपरान्त उत्कृष्टता की दिशा में उछाल देना असाधारण दुस्साहस भरा प्रयत्न है।" इस कथन के प्रकाश में युगसृजन की चुनौती की जटिलता को समझाएँ।

उत्तर: यह कथन युगसृजन की चुनौती की दोहरी और अत्यंत कठिन प्रकृति को दर्शाता है।

1. पहली चुनौती (रोकना): पतन की ओर ले जाने वाली प्रवृत्तियाँ (जैसे- भ्रष्टाचार, स्वार्थ) बहुत तेजी से फैलती हैं क्योंकि वे मनुष्य की निम्न वृत्तियों को आकर्षित करती हैं। इन्हें रोकना ठीक वैसा ही है जैसे किसी प्रचंड तूफान को रोकना। यह एक ध्वंसात्मक या नकारात्मक पक्ष से संघर्ष है।

2. दूसरी चुनौती (उछाल देना): केवल नकारात्मकता को रोकना ही पर्याप्त नहीं है। इसके बाद समाज को उत्कृष्टता की दिशा में आगे बढ़ाना होता है, जो एक सृजनात्मक और कहीं अधिक कठिन कार्य है। इसकी तुलना एक कैंसर के मरीज को न केवल रोगमुक्त करने, बल्कि उसे एक पहलवान जैसा स्वस्थ बनाने से की गई है। यह प्रक्रिया असाधारण दुस्साहस की मांग करती है क्योंकि इसमें पहले मौजूदा विकृतियों से लड़ना पड़ता है और फिर एक पूरी तरह से नई और बेहतर व्यवस्था की नींव रखनी पड़ती है। यह एक साथ ध्वंस और सृजन का कार्य है, जो केवल सृजनात्मक प्रतिभाएं ही कर सकती हैं।

अध्याय 5: प्रतिभा सम्बर्धन का मूल्य भी चुकाया जाए

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार भाग्यवान कौन हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार भाग्यवान वे हैं, जिन्होंने आदर्शों के साथ रिश्ता जोड़ा, महानता का मार्ग अपनाया

और ऐसा कुछ कर दिखाया, जिसका अनुकरण करते हुए असंख्य लोगों को गौरव और गरिमा का प्रकाश मिलता रहे।

प्रश्न 2: कृष्ण ने अर्जुन को धर्मयुद्ध में शामिल होने के लिए क्या कहकर प्रेरित किया था?

उत्तर: कृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि दुष्ट कौरव तो पहले से ही मरे पड़े हैं, क्योंकि मैंने उनका तेजहरण कर लिया है। तुम्हें तो केवल धर्मयुद्ध में शामिल होकर श्रेय प्राप्त करना है।

प्रश्न 3: प्रतिभा सम्पादन के लिए किस प्राथमिक कक्षा में पढ़े बिना काम नहीं चलता?

उत्तर: प्रतिभा सम्पादन के लिए "सेवासाधना" की प्राथमिक कक्षा में पढ़े बिना काम नहीं चलता।

प्रश्न 4: उच्चस्तरीय सेवासाधना के दो प्रमुख तत्व कौन से हैं?

उत्तर: उच्चस्तरीय सेवासाधना के दो प्रमुख तत्व हैं: पहला, सत्प्रवृत्ति सम्बर्धन और दूसरा, दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन।

प्रश्न 5: लेखक ने परमार्थ की क्या परिभाषा दी है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, व्यापक स्तर का सार्वभौमिक स्वार्थ ही परमार्थ है। परमार्थ करने वाले अपना हित तो करते ही हैं, साथ ही दूसरों को भी गरिमा प्रदान करते हैं।

प्रश्न 6: लेखक ने महाकाल द्वारा भेजे गए आमंत्रण की तुलना किससे की है?

उत्तर: लेखक ने महाकाल द्वारा प्रज्ञा-परिजनों को भेजे गए आमंत्रण की तुलना किसी समर्थ सत्ता द्वारा अपने सहायक के रूप में सम्मानपूर्वक बुलाए जाने से की है, जहाँ दीनता नहीं बल्कि सम्मान होता है।

प्रश्न 7: "सतयुग की वापसी" से लेखक का क्या आशय है?

उत्तर: "सतयुग की वापसी" से लेखक का आशय एक ऐसे उज्ज्वल भविष्य से है जहाँ सुख-शांति और प्रगति का वातावरण हो, एकता-समता को मान्यता मिले, ध्वंस का स्थान सृजन ले और चेतना तथा भौतिक शक्तियों का उपयोग केवल अच्छे उद्देश्यों के लिए हो।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक क्यों कहते हैं कि "माया मिली न राम"? इस कथन के माध्यम से वे किन लोगों पर व्यंग्य कर रहे हैं और क्यों?

उत्तर: लेखक इस कथन के माध्यम से उन लोगों पर व्यंग्य कर रहे हैं जो आदर्शों के मार्ग पर चलने का अवसर मिलने पर भी कृपणता या संकीर्ण स्वार्थ के कारण चूक गए। वे सोचते रहे कि स्वार्थ साधकर वे सुखी हो जाएँगे, लेकिन उनकी तृष्णा कभी पूरी नहीं होती और वे जीवन भर कोल्हू के बैल की तरह पिसते रहते हैं। अंत में, उन्हें न तो आदर्शों का श्रेय (राम) मिल पाता है और न ही भौतिक सुख-साधन (माया), जिससे उन्हें अपनी मूर्खता पर पश्चाताप ही हाथ लगता है।

प्रश्न 2: प्रतिभा सम्बर्धन का 'मूल्य' क्या है और इसे कैसे चुकाया जा सकता है? सरकार द्वारा सैनिकों को मोर्चे

पर भेजने के उदाहरण से इसे स्पष्ट करें।

उत्तर: प्रतिभा सम्बर्धन का 'मूल्य' है—संकीर्ण स्वार्थपरता का त्याग और परमार्थ के लिए अपने समय, साधन और क्षमताओं का एक अंश समर्पित करना। इसे सेवासाधना (सत्प्रवृत्ति सम्बर्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन) को एक सुनिश्चित व्रत की तरह अपनाकर चुकाया जा सकता है। जैसे सरकार जब सैनिकों को मोर्चे पर भेजती है तो उनके लिए अस्त्र, भोजन और वाहन की व्यवस्था करती है तथा उनके परिवार के लिए वेतन भी देती है। ठीक उसी प्रकार, जो व्यक्ति युगसृजन के लिए कटिबद्ध होता है, उसे भी महाकाल द्वारा आवश्यक प्रतिभा और उपयुक्त परिस्थितियाँ उपलब्ध कराई जाती हैं।

प्रश्न 3: लेखक के अनुसार, आज के समय में केवल "अपने मतलब से मतलब रखने" की नीति क्यों अव्यावहारिक हो गई है?

उत्तर: लेखक के अनुसार यह नीति इसलिए अव्यावहारिक हो गई है क्योंकि आधुनिक प्रगति के कारण व्यक्ति और समाज एक-दूसरे से मछली और पानी की तरह अविच्छिन्न रूप से जुड़ गए हैं। अब कोई भी व्यक्ति केवल अपनी उन्नति या सुविधा से सुखी नहीं रह सकता। यदि आसपास का वातावरण विपन्न या अशांत है (जैसे गुण्डागर्दी, महामारी), तो किसी भी सज्जन व्यक्ति की शांति सुरक्षित नहीं रह सकती। इसलिए, जनमानस के स्तर को उठाना अब केवल परमार्थ नहीं, बल्कि प्रकारान्तर से अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा करना भी है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: "पात्रता की गहराई रहने पर ही वर्षा का पानी विशाल जलाशय के रूप में लहराता है।" इस कथन का विश्लेषण करें और बताएं कि युग परिवर्तन के संदर्भ में 'पात्रता' कैसे विकसित की जा सकती है?

उत्तर: इस कथन का गहन अर्थ है कि दैवी अनुदान या महान अवसर (वर्षा का पानी) उन्हीं को मिलते हैं जो उसके योग्य होते हैं, अर्थात् जिनमें उसे धारण करने की क्षमता या 'पात्रता' (गहराई) होती है। युग परिवर्तन के संदर्भ में 'पात्रता' विकसित करने का अर्थ है:

1. **आदर्शों से जुड़ना:** संकीर्ण स्वार्थपरता और कृपणता को त्यागकर महानता के मार्ग को अपनाना।
2. **साहसिकता दिखाना:** आपत्तिकाल की चुनौती को स्वीकार कर, अर्जुन और भगीरथ की तरह उदात्त साहसिकता का परिचय देना।
3. **सेवासाधना:** अपने समय और साधनों का एक अंश नियमित रूप से सत्प्रवृत्ति सम्बर्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन जैसे कार्यों में लगाना। जो व्यक्ति इन गुणों को अपने जीवन में उतारता है, वही युग परिवर्तन जैसे महायज्ञ में भाग लेने और उसका श्रेय पाने का पात्र बनता है। देवता भी कुपात्रों पर कृपा नहीं करते।

प्रश्न 2: कृष्ण-अर्जुन, राम-सुग्रीव, रामकृष्ण-विवेकानंद के उदाहरणों के माध्यम से लेखक यह कैसे सिद्ध करते हैं

कि युग परिवर्तन के लिए दैवी सत्ता स्वयं सक्रिय होकर प्रतिभाओं का चयन करती है? इस चयन प्रक्रिया की उपेक्षा करने का क्या परिणाम हो सकता है?

उत्तर: लेखक इन उदाहरणों से यह सिद्ध करते हैं कि जब भी युग परिवर्तन जैसे महान कार्यों की आवश्यकता होती है, तो दैवी सत्ता (महाकाल) स्वयं प्रेरणा बनकर योग्य प्रतिभाओं की खोज में निकलती है और उन्हें भागीदार बनने के लिए प्रेरित करती है। जैसे राम स्वयं सुग्रीव-हनुमान के पास गए, रामकृष्ण विवेकानन्द के घर पहुँचे और कृष्ण ने अर्जुन को हर तरह से समझाकर युद्ध के लिए तैयार किया। यह दर्शाता है कि यह कोई सामान्य अवसर नहीं, बल्कि एक विशेष आमंत्रण है। इस चयन प्रक्रिया की उपेक्षा करना एक हतभागी और अदूरदर्शी व्यक्ति का ही काम हो सकता है। इसका परिणाम यह होगा कि व्यक्ति लोभ-मोह के तुच्छ बंधनों में फँसकर उस महान सौभाग्य से वंचित रह जाएगा जो उसे इतिहास में प्रकाश स्तम्भ बना सकता था। ऐसे लोग बाद में केवल अपनी मूर्खता पर पश्चाताप ही करते रह जाते हैं।

अध्याय 6: प्रतिभा के बीजांकुर हर किसी में विद्यमान हैं

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार मनुष्य के भीतर की असीम शक्तियों को प्रचलित भाषा में किन नामों से पुकारा जाता है?

उत्तर: प्रचलित भाषा में मनुष्य के भीतर की असीम शक्तियों को दैवी वरदान, ऋद्धि-सिद्धियों का भण्डार अथवा दिव्य विभूतियों के नाम से पुकारा जाता है।

प्रश्न 2: लेखक के अनुसार, हमारे शरीर में इतनी प्रचण्ड विद्युत शक्ति होने पर भी उसका अनुभव क्यों नहीं होता?

उत्तर: इसका अनुभव इसलिए नहीं होता क्योंकि शरीर के घटक (जीवकोष) बहुत छोटे होते हैं और उनमें काम करने वाली सचेतन विद्युत की मात्रा बहुत कम आँकी जाती है।

प्रश्न 3: हमारे मस्तिष्क का अधिकांश भाग प्रसुप्त या मूर्च्छित स्थिति में क्यों पड़ा रहता है?

उत्तर: क्योंकि मनुष्य की इच्छा-आकांक्षाएँ सीमित होती हैं (जैसे- पेट-प्रजनन, लोभ-मोह) और वह केवल उन्हीं को पूरा करने के लिए अपने मन और बुद्धि के एक छोटे अंश का ही उपयोग करता है। जिन क्षमताओं का उपयोग नहीं होता, वे प्रसुप्त हो जाती हैं।

प्रश्न 4: अध्यात्म दर्शन का सार-निष्कर्ष क्या है?

उत्तर: अध्यात्म दर्शन का सार-निष्कर्ष है: 'अपने को जानो' (आत्मानं विद्धि), अपने को विकसित करो और ऐसी राह पर चलो जो ऊँचे लक्ष्य तक पहुँचाती हो।

प्रश्न 5: प्रतिभा परिष्कार की आरंभिक शर्त क्या है?

उत्तर: प्रतिभा परिष्कार की आरंभिक शर्त है—अपने आपसे जूझना, अर्थात् आलस्य, प्रमाद, निराशा, चिंता जैसे मानसिक दुर्गुणों से संघर्ष करना और उनके स्थान पर जागरूकता, आशा, प्रसन्नता और उमंग जैसी सत्प्रवृत्तियों को स्थापित करना।

प्रश्न 6: प्रतिभा रूपी त्रिवेणी के तीन प्रवाह कौन-कौन से हैं?

उत्तर: प्रतिभा रूपी त्रिवेणी के तीन प्रवाह हैं: शारीरिक ओजस्, मानसिक तेजस् और अन्तराल में स्थित वर्चस्।

प्रश्न 7: 'वर्चस्' का क्या अर्थ है?

उत्तर: 'वर्चस्' का अर्थ है सदाशयता (अच्छे आशय) पर सघन श्रद्धा का होना। जिसके भीतर वर्चस् उभरता है, उसमें शालीनता और सज्जनता की कमी नहीं रहती।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक ने मानव शरीर की तुलना एक विशालकाय बिजलीघर से क्यों की है? समझाइए कि इस बिजलीघर की अधिकांश शक्ति अप्रयुक्त क्यों रह जाती है।

उत्तर: लेखक ने मानव शरीर की तुलना एक विशालकाय बिजलीघर से इसलिए की है क्योंकि शरीर के अरबों-खरबों जीवकोषों में एक सचेतन विद्युत प्रवाह होता है, जो जन्म से मृत्यु तक अनवरत रूप से काम करता है। यदि इस समस्त शारीरिक बिजली को एकत्रित किया जाए, तो उसकी शक्ति किसी बड़े बिजलीघर से कम नहीं होगी। इस बिजलीघर की अधिकांश शक्ति इसलिए अप्रयुक्त रह जाती है क्योंकि साधारण मनुष्य अपनी दिनचर्या, आजीविका और सीमित इच्छाओं को पूरा करने के लिए इस ऊर्जा के बहुत छोटे अंश का ही उपयोग करता है। जैसे उथली साँस लेने वाले के फेफड़ों का अधिकांश भाग निष्क्रिय रहता है, उसी प्रकार जिन मानसिक और शारीरिक क्षमताओं का उपयोग नहीं होता, वे प्रसुप्त और निर्बल बनी रहती हैं।

प्रश्न 2: "देवता भी तपस्वियों को ही वरदान देते हैं।" इस कथन का वास्तविक अर्थ क्या है? यह कथन प्रतिभा विकास के लिए पुरुषार्थ के महत्व को कैसे रेखांकित करता है?

उत्तर: इस कथन का वास्तविक अर्थ यह है कि सफलता या दैवी सहायता (वरदान) केवल उन्हीं को मिलती है जो उसके लिए कठोर परिश्रम (तप) करते हैं और स्वयं को योग्य बनाते हैं। यह इस धारणा को खारिज करता है कि सब कुछ भाग्य या बाहरी कृपा से मिलता है। यह प्रतिभा विकास के लिए पुरुषार्थ के महत्व को इस प्रकार रेखांकित करता है कि व्यक्ति को दूसरों की सहायता की प्रतीक्षा करने के बजाय अपनी सोई हुई शक्तियों को जगाने पर ध्यान देना चाहिए। जब व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से स्वयं को विकसित करता है, तभी बाहरी सहायता और समर्थन (देवताओं के वरदान) स्वाभाविक रूप से उसे मिलने लगते हैं, ठीक वैसे ही जैसे खिले हुए फूल पर तितलियाँ और भौरे अपने आप आ जाते हैं।

प्रश्न 3: ब्रह्मतेजस् या ब्रह्मवर्चस् क्या है और इसे कैसे अर्जित किया जा सकता है? बुद्ध और चाणक्य के उदाहरणों से इसकी शक्ति को स्पष्ट करें।

उत्तर: ब्रह्मतेजस् या ब्रह्मवर्चस् एक उच्चस्तरीय प्रतिभा है जो व्यक्ति की चेतनात्मक प्रखरता से उत्पन्न होती है। इसे शारीरिक ओजस् (संयम द्वारा), मानसिक तेजस् (एकाग्रता और तत्परता द्वारा) और आत्मिक वर्चस् (सदाशयता और आदर्शवादिता पर श्रद्धा द्वारा) को जगाकर और प्रखर बनाकर अर्जित किया जा सकता है। इसकी शक्ति असीम है। भगवान बुद्ध ने इसी ब्रह्मवर्चस् के बल पर एक लाख भिक्षु तैयार किए और विश्व में धर्म-चक्र-प्रवर्तन किया। इसी प्रकार, चाणक्य ने अपनी एकाकी योजना और प्रतिभा के बल पर आक्रमणकारियों को भारत से खदेड़ दिया और नालंदा जैसे विश्वविद्यालय की स्थापना की। ये उदाहरण सिद्ध करते हैं कि यह प्रतिभा भौतिक साधनों से कहीं अधिक शक्तिशाली है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक कहते हैं कि प्रतिभा "भीतर से ही उफनकर ऊपर आया हुआ" तत्व है, न कि कोई बाहरी वरदान। इस सिद्धांत का समर्थन करते हुए अंडे से चूजे के निकलने और प्रसव वेदना के उदाहरणों का विश्लेषण करें।
उत्तर: यह सिद्धांत बताता है कि प्रतिभा का स्रोत व्यक्ति के भीतर है, जिसे आंतरिक प्रयास से ही प्रकट किया जा सकता है। लेखक ने इसे दो शक्तिशाली उदाहरणों से समझाया है:

1. **अंडे से चूजे का निकलना:** जब अंडे के भीतर चूजा समर्थ हो जाता है, तो वह स्वयं अंदर से जोर लगाकर छिलके को तोड़ता है और बाहर आता है। बाहरी सहायता (माँ की) उसे तभी मिलती है जब वह पहला कदम स्वयं उठाता है। यह दर्शाता है कि प्रतिभा को प्रकट करने के लिए पहला और सबसे महत्वपूर्ण प्रयास व्यक्ति को स्वयं भीतर से करना होता है।

2. **प्रसव वेदना:** प्रसव वेदना का कारण यह है कि गर्भ में स्थित बालक बाहर निकलने के लिए अपनी शक्ति का प्रयोग करता है। यदि भ्रूण स्वयं प्रयास न करे तो जन्म की प्रक्रिया अत्यंत कठिन हो जाती है। यह उदाहरण भी यही सिद्ध करता है कि परिवर्तन और विकास की प्रक्रिया आंतरिक बल के प्रयोग से ही आरंभ होती है। दोनों ही उदाहरण इस बात पर बल देते हैं कि बाहरी परिस्थितियाँ या सहायता तभी प्रभावी होती हैं जब व्यक्ति अपनी आंतरिक सुप्त शक्तियों को जगाने का साहस दिखाता है।

प्रश्न 2: "मनस्वी के आगे नियति भी पानी भरती है।" सावित्री-सत्यवान और भीष्म के पौराणिक उदाहरणों के आलोक में इस कथन की विवेचना करें। यह कथन प्रतिभा परिष्कार के लिए किस प्रकार की मानसिक दृढ़ता की मांग करता है?

उत्तर: यह कथन मनुष्य के संकल्पबल और आत्मशक्ति की सर्वोच्चता को स्थापित करता है। इसका अर्थ है कि एक दृढ़ निश्चयी और आत्मबल संपन्न व्यक्ति असंभव को भी संभव कर सकता है और भाग्य (नियति) को भी

अपने अनुकूल मोड़ने की क्षमता रखता है।

• **सावित्री का उदाहरण:** उन्होंने अपने आत्मबल और संकल्प से यमराज (मृत्यु के देवता) को भी विवश कर दिया और अपने मृत पति को पुनः जीवित करा लिया। यह दिखाता है कि प्रबल इच्छाशक्ति नियति के विधान को भी चुनौती दे सकती है।

• **भीष्म का उदाहरण:** शर-शय्या पर पड़े असह्य पीड़ा सहते हुए भी उन्होंने अपनी इच्छा से मृत्यु का समय (उत्तरायण सूर्य) निर्धारित किया और मौत को लौटा दिया। यह उनके मन और चेतना पर उनके अद्भुत नियंत्रण को दर्शाता है। यह कथन प्रतिभा परिष्कार के लिए **अदम्य इच्छाशक्ति, अटूट आत्मविश्वास और विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य न खोने** जैसी मानसिक दृढ़ता की मांग करता है। इसका तात्पर्य है कि व्यक्ति को अपनी क्षमताओं पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए और यह मानना चाहिए कि उसके पुरुषार्थ के आगे कोई भी बाधा स्थायी नहीं है।

अध्याय 7: उत्कृष्टता के साथ जुड़ें, प्रतिभा के अनुदान पाएँ

सरल स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक के अनुसार इक्कीसवीं सदी किसकी क्रीड़ास्थली होगी?

उत्तर: लेखक के अनुसार इक्कीसवीं सदी प्रतिभावानों की क्रीड़ास्थली होगी।

प्रश्न 2: लेखक ने किस आधार पर कहा है कि निकट भविष्य में युग परिवर्तन सुनिश्चित है?

उत्तर: लेखक ने दिव्यदर्शी अंतःस्फुरणा और विश्व वातावरण में हो रहे परिवर्तनों के आधार पर यह कहा है। जनमानस अब अवांछनीयताओं से ऊब चुका है और नियति भी औचित्य को प्रतिष्ठित करना चाहती है, इसलिए युग परिवर्तन सुनिश्चित है।

प्रश्न 3: अगले दिनों सम्मान वैभव को मिलेगा या वर्चस्व को?

उत्तर: अगले दिनों सम्मान वैभव को नहीं, बल्कि उस वर्चस्व को मिलेगा जो आदर्शों के लिए उत्सर्ग करने का साहस रखता है।

प्रश्न 4: लेखक के अनुसार प्राणवान, प्रज्ञावान लोगों को इस समय क्या करने की आवश्यकता है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, यह सही समय है कि प्राणवान, प्रज्ञावान लोग साँप की तरह अपनी पुरानी केंचुली बदल डालें, अर्थात् अपने पुराने दृष्टिकोण और आदतों को बदलकर युगशिल्पियों के लिए प्रेरणाप्रद बनें।

प्रश्न 5: व्यक्ति अपने प्रभामण्डल के साथ जुड़कर ही पूर्ण क्यों बनता है?

उत्तर: क्योंकि अकेला व्यक्ति बड़े काम नहीं कर सकता, जैसे अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। अपने जैसे विचारों वाले लोगों के साथ सहयोगपूर्वक बड़े कदम उठाने से ही अपनी और साथियों की प्रतिभा में चार चाँद

लगते हैं।

प्रश्न 6: लेखक ने परब्रह्म-परमात्मा को किसका समुच्चय बताया है?

उत्तर: लेखक ने सत्प्रवृत्तियों के समुच्चय को ही परब्रह्म-परमात्मा और प्रतिभाओं का पुंज बताया है।

प्रश्न 7: क्या प्रतिभा का धनी व्यक्ति कभी हारता है या अभावग्रस्त रहता है?

उत्तर: नहीं, प्रतिभा का धनी व्यक्ति न कभी हारता है और न अभावग्रस्त रहने की शिकायत करता है। उसे किसी पर दोषारोपण करने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती।

कठिन स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: उत्कृष्टता की ऊँचाई तक पहुँचने के लिए "शूरवीरों जैसा साहस" दिखाने की आवश्यकता क्यों है?

प्रह्लाद, विभीषण और भरत के उदाहरणों से इसे स्पष्ट करें।

उत्तर: उत्कृष्टता की ऊँचाई तक पहुँचने के लिए "शूरवीरों जैसा साहस" दिखाने की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि सामान्य प्रचलन हमेशा पतन या ढलान की ओर जाने का होता है, जैसे पानी नीचे की ओर बहता है। उत्कृष्टता की ओर बढ़ना इस स्वाभाविक प्रवाह के विरुद्ध जाने जैसा है, जिसके लिए असाधारण साहस चाहिए। प्रह्लाद, विभीषण और भरत को यह साहस दिखाना पड़ा। उन्हें अपने कुटुम्बियों और प्रचलित मान्यताओं के विरुद्ध जाकर आदर्शों का अनुशासन अपनाना पड़ा। प्रह्लाद ने पिता के विरुद्ध, विभीषण ने भाई के विरुद्ध और भरत ने अपनी माँ और राज-पाट के मोह के विरुद्ध जाकर सत्य और धर्म का पक्ष लिया। यह सिद्ध करता है कि उत्कृष्टता के मार्ग पर चलने के लिए सामाजिक और पारिवारिक दबावों का सामना करने का साहस अनिवार्य है।

प्रश्न 2: लेखक क्यों कहते हैं कि "आज का दृष्टिकोण जिसे घाटा बताता है, कल वैसी स्थिति न रहेगी"? युग परिवर्तन के संदर्भ में इस कथन का क्या महत्व है?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि युग परिवर्तन के साथ-साथ मूल्यों और मान्यताओं में भी परिवर्तन होता है। आज के समय में आदर्शों पर चलना, परमार्थ के लिए त्याग करना या ईमानदारी अपनाना भौतिकवादी दृष्टिकोण से 'घाटे का सौदा' लग सकता है। लेकिन जब युग बदलेगा और सतयुगी मान्यताएँ (जैसे- समता, एकता, सदाशयता) स्थापित होंगी, तब इन्हीं गुणों को सबसे अधिक सम्मान मिलेगा। तब लोग वास्तविकता को समझेंगे और आज जो लोग आदर्शों पर चल रहे हैं, वे ही सबसे अधिक लाभ में रहेंगे। इस कथन का महत्व यह है कि यह दूरदर्शिता अपनाने और तात्कालिक लाभ के मोह में न पड़कर स्थायी श्रेय के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

प्रश्न 3: "संयम और साहस का मिलन ही वरिष्ठता तक पहुँचा देता है।" इस कथन की व्याख्या करें। यह प्रतिभा परिष्कार के दो सबसे महत्वपूर्ण पहलू कैसे हैं?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि महानता या श्रेष्ठता (वरिष्ठता) प्राप्त करने के लिए दो गुण अनिवार्य हैं: संयम और साहस।

- **संयम:** यह व्यक्ति की आंतरिक शुद्धि और शक्ति-संचय का प्रतीक है। संयम से व्यक्ति अपनी ऊर्जा को व्यर्थ होने से बचाता है और उसे उच्च लक्ष्यों के लिए केंद्रित करता है। यह प्रतिभा की नींव है।
- **साहस:** यह संचित ऊर्जा को सही दिशा में क्रियान्वित करने की क्षमता है। साहस के बिना, व्यक्ति ज्ञान और क्षमता होते हुए भी कोई बड़ा कदम नहीं उठा पाता। ये दोनों प्रतिभा परिष्कार के सबसे महत्वपूर्ण पहलू हैं क्योंकि संयम प्रतिभा को 'अर्जित' करने में मदद करता है और साहस उस अर्जित प्रतिभा को 'प्रकट' करने का माध्यम बनता है। बिना संयम के साहस उच्छृंखलता बन सकता है और बिना साहस के संयम निष्क्रियता। दोनों का संतुलन ही व्यक्ति को महान बनाता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

प्रश्न 1: लेखक ने प्रतिभा परिष्कार के लिए "उत्कृष्टता के साथ जुड़ने" का आह्वान किया है। इस जुड़ाव का स्वरूप क्या है और इसका परिणाम क्या होता है? अग्नि और ईंधन के उदाहरण से इसे विस्तार से समझाएँ।

उत्तर: "उत्कृष्टता के साथ जुड़ने" का आह्वान एक गहन आध्यात्मिक और व्यावहारिक प्रक्रिया है।

- **जुड़ाव का स्वरूप:** इसका स्वरूप है अपनी संकीर्ण स्वार्थपरता को त्यागकर स्वयं को सत्प्रवृत्तियों के समुच्चय (परब्रह्म) के साथ एकाकार कर देना। व्यावहारिक रूप से इसका अर्थ है अपने जीवन, विचारों और क्रियाकलापों को उच्च आदर्शों, लोकमंगल और युग-परिवर्तन जैसे महान लक्ष्यों के लिए समर्पित कर देना।
- **परिणाम:** इस जुड़ाव का परिणाम चमत्कारी होता है। लेखक ने इसे अग्नि और ईंधन के उदाहरण से समझाया है। ईंधन का ढेर (व्यक्ति) जब अग्नि (उत्कृष्टता/परमात्मा) के संपर्क में आता है, तो उसे अपने स्वार्थ (अस्तित्व) में कटौती तो करनी पड़ती है (जलना पड़ता है), लेकिन इसके बदले में वह स्वयं ज्योतिर्मय ज्वाला (प्रखर प्रतिभा) की तरह दमकने लगता है। ठीक इसी प्रकार, जब व्यक्ति उत्कृष्टता से जुड़ता है, तो उसे अपने छोटे-छोटे स्वार्थों का त्याग करना पड़ता है, लेकिन इसके बदले में उसका व्यक्तित्व प्रखर और तेजस्वी बन जाता है और उसे प्रतिभा के भंडार से असीम अनुदान प्राप्त होता है।

प्रश्न 2: प्रतिभा का धनी व्यक्ति "न कभी हारता है और न अभावग्रस्त रहने की शिकायत करता है।" इस कथन का विश्लेषण करें। यह किस प्रकार की आंतरिक आत्मनिर्भरता की ओर संकेत करता है और इसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

उत्तर: यह कथन एक ऐसी मनःस्थिति को दर्शाता है जहाँ व्यक्ति बाहरी परिस्थितियों या लोगों पर निर्भर नहीं रहता।

- **विश्लेषण:** 'हारना' और 'अभाव' बाहरी विफलता और संसाधनों की कमी के सूचक हैं। प्रतिभा का धनी व्यक्ति

इसलिए नहीं हारता क्योंकि वह हर परिस्थिति को एक अवसर के रूप में देखता है और प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदलने की क्षमता रखता है। वह अभाव की शिकायत इसलिए नहीं करता क्योंकि उसकी सबसे बड़ी संपत्ति उसकी अपनी आंतरिक क्षमता है, जिसे कोई छीन नहीं सकता। उसे किसी से सहयोग न मिलने या किसी द्वारा मार्ग रोकने का कोई भय नहीं होता, क्योंकि उसकी प्रतिभा ही उसकी सबसे बड़ी मार्गदर्शक और शक्ति है।

- **आंतरिक आत्मनिर्भरता:** यह कथन पूर्ण आंतरिक आत्मनिर्भरता की ओर संकेत करता है। यह वह अवस्था है जहाँ व्यक्ति अपनी खुशी, सफलता और प्रगति के लिए बाहरी दुनिया का मोहताज नहीं रहता।

- **प्राप्ति का मार्ग:** इस आत्मनिर्भरता को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अपनी दिशा और लक्ष्य स्पष्ट रूप से निर्धारित करने होते हैं। जब लक्ष्य निर्धारित हो जाता है, तो मार्गदर्शक या तो मिल जाते हैं, या फिर व्यक्ति की अपनी अंतरात्मा ही उस कमी को पूरा कर देती है। यह अवस्था आदर्शों के प्रति अटूट निष्ठा, निरंतर पुरुषार्थ और अपनी आंतरिक शक्तियों पर पूर्ण विश्वास करके प्राप्त की जा सकती है।

प्रमुख अवधारणाओं एवं शब्दों की परिभाषाएँ:

- **भगवत्सत्ता का निकटतम और सुनिश्चित स्थान** - यह अन्तराल (भीतर) में विद्यमान प्राणाग्नि है।
- **आत्मबल-संकल्पबल** - यह वही प्राणाग्नि है जो प्राणवान और प्रतिभाशाली व्यक्तियों में सामान्य लोगों की तुलना में अधिक मात्रा में होती है।
- **प्रतिभावान् व्यक्ति** - वह व्यक्ति जो कठिनाइयों से जूझ सकता है और प्रगति की दिशा में बढ़ चलने के लिए साधन जुटा सकता है।
- **हीन वर्ग** - ये परावलम्बी लोग होते हैं जिनमें औचित्य की विवेचना करने की बुद्धि लगभग नहीं होती। वे मार्गदर्शन और साधनों के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं और अनुकरण व आश्रय ही उनके स्वभाव का अंग होता है।
- **प्रजाजन** - यह समझदार लोगों का वह वर्ग है जो योग्यता होते हुए भी संकीर्ण स्वार्थपरता से घिरा रहता है और अपनी विशेषताओं का उपयोग केवल लोभ, मोह और अहंकार की पूर्ति के लिए करता है। वे अपना बोझ तो उठा लेते हैं, पर परावलम्बी या भारभूत नहीं होते।
- **प्रतिभाशाली (भौतिक क्षेत्र में)** - यह तीसरा वर्ग है जो भौतिक क्षेत्र में कार्यरत रहकर व्यवस्थाएँ बनाता है, अनुशासन में रहता है और अपनी नाव स्वयं खेते हुए दूसरों को भी पार कराता है। इन्हें ही बोल-चाल की भाषा में प्रतिभावान कहते हैं।
- **देव-मानव (महापुरुष)** - यह सबसे ऊँची श्रेणी है। इनमें प्रतिभा भरपूर होती है, पर वे उसका उपयोग आत्म परिष्कार से लेकर लोकमंगल तक के उच्चस्तरीय प्रयोजनों में ही करते हैं।
- **प्रतिभाएँ** - ये वस्तुतः ऐसी सम्पदाएँ हैं, जिनसे न केवल प्रतिभाशाली स्वयं श्रेय अर्जित करते हैं, बल्कि अपने क्षेत्र, समुदाय और देश की अति विकट उलझनों को भी सुलझाने में सफल होते हैं। इन्हें देवदूत तक कहा जाता है।
- **युगसन्धि का समय** - यह वर्तमान समय है जिसमें एक ओर महाविनाश का प्रलयंकर तूफान है, तो दूसरी ओर सतयुगी नवनिर्माण की उमंगें भी हैं। यह विनाश और विकास का समन्वय काल है।
- **महाजागरण** - यह वह मनःस्थिति है जिसमें आलस्य-प्रमाद से बचकर सदा जागरूक और स्फूर्तिवान रहा जाता है और एक-एक क्षण को बहुमूल्य मानकर उन्हें अच्छे उद्देश्यों में सुनियोजित किया जाता है।
- **अग्रगमन-नेतृत्व** - यह उत्साह, साहस और आत्मविश्वास का प्रतीक है। यह उचित के प्रति अटूट आस्था रखकर, दूसरों के समर्थन के बिना भी, एकाकी आगे बढ़कर कार्य कर दिखाने की क्षमता है।
- **प्रतिभा महासिद्धि की साधना** - इस साधना को करने वाले अपने चरित्र की प्रामाणिकता को हर हालत में बनाए रखते हैं, भले ही इसके लिए अभावग्रस्त स्थिति में रहना पड़े।

- **युगसृजन** - यह एक बहुत बड़ा काम है जिसका संबंध विश्वव्यापी समस्त मानव जाति के चिंतन, चरित्र और व्यवहार में आमूल-चूल परिवर्तन करने से है।
- **आत्मशक्ति का जागरण** - यदि आत्मशक्ति जागती है तो उसका दर्शन आदर्शवादी प्रतिभा में ही अनुभव होता है, जिसमें विनाश से निपटने और सृजन को चरितार्थ करने की सामर्थ्य होती है। यही दैवी वरदान है।
- **दैवी सम्पदा** - सत्प्रयोजनों के लिए प्रस्तुत किया गया आदर्शवादी साहस व्यक्तित्व को प्रामाणिक, प्रखर और प्रतिभावान बनाता है, इसी उपार्जन को दैवी सम्पदा के रूप में आँका जा सकता है।
- **परमार्थ** - व्यापक स्तर का सार्वजनीन स्वार्थ ही परमार्थ है। परमार्थ परायण अपना हित तो करते ही हैं, साथ ही दूसरों को भी गरिमा प्रदान करते हैं।
- **सेवासाधना** - प्रतिभा संपादन के लिए यह प्राथमिक कक्षा है, जिसमें दो प्रमुख तत्त्व हैं - सत्प्रवृत्ति सम्बर्धन और दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन।
- **दैवी वरदान / ऋद्धि-सिद्धि / दिव्य विभूतियाँ** - मनुष्य के भीतर की असीम शक्तियों का प्रकटीकरण, जिसे लोग इन नामों से पुकारते हैं, किन्तु वास्तविकता में यह भीतर से ही उभरकर आता है।
- **अध्यात्म दर्शन का सार** - इसका सार है 'अपने को जानो' (आत्मानं विद्धि), अपने को विकसित करो और ऊँचे लक्ष्य तक ले जाने वाले मार्ग पर चलो।
- **वर्चस्** - सदाशयता पर सघन श्रद्धा का होना ही वर्चस् है। यह जिसके भीतर उभरता है, उसमें शालीनता और सज्जनता की कमी नहीं रहती।
- **ब्रह्मतेजस् / ब्रह्मवर्चस्** - यह उच्चस्तरीय प्रतिभा ही है, जिसे अर्जित करने वाला व्यक्ति अपनी चेतनात्मक प्रखरता से महान पुण्य प्रयोजन सम्पन्न करने में समर्थ होता है।
- **तपश्चर्या** - उच्च आदर्शों के अनुरूप स्वयं के आचरण को बनाने और ढालने के कष्टसाध्य क्रम को ही तपश्चर्या कहा जाता रहा है।
- **व्यावहारिक क्षेत्र का धर्मात्मा** - ऐसे लोग जो न केवल अपना काम करते हैं बल्कि समूचे संबद्ध क्षेत्र के हर पक्ष पर ध्यान रखते हैं, सुधार के लिए नम्रतापूर्वक परामर्श देते हैं और व्यवस्थापक बन पाते हैं।
- **उत्कर्ष** - जब सफलता मिलने पर हौसले बुलंद होते हैं और दूने उत्साह से काम करने का मन करता है, तो इस प्रयास में प्रतिभा विकसित और परिपक्व होती है, यही उत्कर्ष है।
- **सत्प्रवृत्तियों का समुच्चय** - यह परब्रह्म-परमात्मा और प्रतिभाओं का पुंज है।